श्री कामेश्वर सिंह "सहायक प्रोफेसर"
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कालेज सासाराम।
वर्ग - बी० ए० पार्ट - III 'प्रतिष्ठा'; पत्र - VI
यूनिट नं० - 22; राजनीतिक विचारक
डा० पुखराज जैन एवं डा० बी०एल० फाड़िया
दिनांक - 12-05-2020; M.No - 9430456771

प्रश्न :- अरस्तू द्वारा क्रान्तियों के प्रतिकार का उपायों का वर्णन करें।

उत्तर :- अरस्तू ने जिस स्पष्टता और विवेक के साथ क्रान्तियों के कारणों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है उसी रूप में उनके निवारण के उपायों पर भी प्रकाश डाला है। एक सच्चे वैज्ञानिक की तरह वह प्रत्येक कारण का उपचार करता है और इसलिए उनके द्वारा सभी वर्णित उपचार किसी न किसी रूप में कारणों से सम्बन्धित है। उसने क्रान्तियों को रोकने हेतु निम्नलिखित उपायों को अपनाने का सुझाव दिया है।

(1) संविधान के प्रति आस्था :— संविधान के प्रति आस्था रखना क्रान्ति से बचने का महत्वपूर्ण उपाय है। शासक वर्ग इस बात का हर सम्भव प्रयास करें कि जनता द्वारा कानून की आज्ञाओं का पालन हो। कानून उल्लंघन करने की छोटी-2 घटनाएँ भी महत्वपूर्ण है, अतः उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

(2) शासक और शासितों में सम्पर्क :

शासक और शासितों में आपस में सम्पर्क होते रहना चाहिए। शासक हमेशा शासितों को सामने आने वाली समस्याओं से अवगत करना चाहिए। शासितों को भी अपनी समस्याओं से शासक को अवगत कराना चाहिए। इस प्रकार का सम्पर्क होने से विभिन्न प्रक्रियाओं का बना रहना क्रान्ति के दूर करने का सबसे अच्छा उपाय है।

(3) विधि का शासन :— व्यक्ति के शासन की अपेक्षा विधि का शासन हमेशा अच्छा होता है क्योंकि इसमें विधि द्वारा शासक की महत्वकांक्षाओं पर नियंत्रण हो सकता है।

(4) समानता का व्यवहार :— विषमता क्रान्ति की जननी है अरस्तू का यह मत है कि शासन के पदों की अवधि कम होनी चाहिए, ताकि अधिक से अधिक व्यक्ति शासक बन सकें, कोई समय के लिए शासन रहकर व्यक्ति अन्याय नहीं कर सकते।

(5) मध्यम वर्ग की प्रधानता :— अरस्तू की मान्यता है कि मध्यम वर्ग सदा मर्यादा तथा स्वामित्व का हामी रहा है, अतः इसकी प्रधानता का होना अनिवार्य है क्रान्ति को रोकने के उपाय में।

(6) आर्थिक समानता :— समाज में अत्याधिक आर्थिक असमानता क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण कारण माना जाता है। अरस्तू का यह मत है कि राज्य की ओर से यह प्रयत्न होना चाहिए कि समाज में आर्थिक असमानता कम से कम हो। धन का वितरण इस प्रकार होना चाहिए कि कोई वर्ग अधिक धनी नहीं और उतना वर्ग अधिक गरीब न हो।

(7) समुचित शिक्षा पद्धति :— किसी भी शासन प्रणाली के स्थिरता के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को शुरू से उस प्रणाली के सांचे में ऐसा प्रशिक्षित करना चाहिए कि वे उस व्यवस्था को आदर्श मानते हुए उसी के अनुसार रहने का प्रयत्न करें।

(8) विदेशी समस्याओं के प्रति जनता का ध्यान आकृष्ट करना :— शासकों को चाहिए कि राज्य की जनता का ध्यान देश की आन्तरिक की ओर से हटाकर राज्य में विदेशी आक्रमण का भय दिखाकर वह जनता में देश प्रेम की भावना को सदा जागृत करें।

Scanned by CamScanner

CLASSMATE
Date :
Page :

(9) राजकीय पदों एवं सम्मानों का न्यायोचित वितरण :-
अरस्तू का मत है कि राज्य में पदों एवं सम्मान का वितरण समान होना चाहिए। राज्य का प्रत्येक वर्ग को उनका मान और पद प्राप्त होना चाहिए। एक ही वर्ग या एक ही राज्य के भाग को व्यक्तियों को सारे पद नहीं देना चाहिए। क्योंकि अन्य वर्ग में असन्तोष पैदा हो जाता है। साथ ही साथ यह भी ध्यान देना चाहिए कि अयोग्य व्यक्तियों को राज्य का पद प्राप्त न हो जाए।

(10) परिवर्तन पर निगरानी :- यह ध्यान रखना चाहिए कि क्रान्ति सदा शासन व्यवस्था और संविधान में परिवर्तन करती है। अतः राज्य को क्रान्ति से बचने के लिए परिवर्तन पर निगरानी रखनी चाहिए। जो परिवर्तन क्रान्ति की ओर अग्रसर होती है उस पर रोक लगानी चाहिए। इससे राज्य की रक्षा होती है।
(11) शासकों में परस्पर सद्भाव :- अरस्तू के अनुसार शासक वर्ग के बीच सद्भाव एवं तालमेल बनाए रखने पर भी बल देता है।
इस प्रकार अरस्तू ने मध्यम वर्ग पर आधारित मिश्रित संविधान और शिक्षा पर अधिक बल दिया है।

विभिन्न शासन प्रणालियों में क्रान्ति को रोकने का उपाय :-

राजतंत्र :- राजतंत्र में क्रान्ति को रोकने के लिए संयताचार को अरस्तू ने अनिवार्य माना है। जो शासक जनता के साथ जितनी मात्रा में संयत व्यवहार करता है उनका शासन उतना ही स्थायी हो जाता है। क्योंकि जनता में उस शासन के प्रति द्वेष की भावना का अभाव होता है।

निरकुंशतंत्र :- निरकुंश तंत्र में क्रान्ति को रोकने के लिए अरस्तू ने निम्नलिखित सुझाव दिये हैं -

(a) शासक को यह चाहिए कि उसके शासन व्यवस्था में जनता सदा यह महसूस करे कि मेरा राजा निरंकुश नहीं है।
(b) सार्वजनिक आय का अपव्यय नहीं होना चाहिए।
(c) कर की वसूली में शासक को चाहिए कि जनता यह अनुभव करे कि इसका व्यय जनसाधारण के हित के लिए है।
(d) निरंकुश का व्यक्तिगत व्यवहार गम्भीर होना चाहिए जिससे उसके सम्पर्क में आने वाले लोगों में उसके प्रति आदर मिश्रित डर रहे, किन्तु आतंक पैदा न हो।

प्रजातंत्र :-

प्रजातंत्र में अरस्तू ने क्रान्ति को रोकने के लिए यह सुझाव देता है कि सम्पन्न लोगों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाए एवं उनकी सम्पत्ति को किसी प्रकार का नुकसान न हो। इसी प्रकार लोगों को खर्चीले किन्तु अनुपयोगी लोक सेवा कार्य भी नहीं करने देना चाहिए।

धनिकतंत्र :- इस शासन प्रणाली में छोटे गरीबों पर ध्यान देना चाहिए। उसे शासन में हस्तक्षेप करने का अवसर एवं धनिक वर्ग द्वारा गरीब वर्ग को सताने पर अधिक से अधिक दंड देना उपयुक्त माना जाता है। इस शासन प्रणाली में स्थायी सम्पत्ति सम्पत्ति एवं नागरिकों की समानता होनी चाहिए। और अधिक लोगों में बँटवारा होना चाहिए। इसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को एक से अधिक सम्पत्ति का उत्तराधिकार प्राप्त न हो सके।

अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि उसने क्रान्ति के कारणों तथा निराकरण के साधनों का एक ठोस उदाहरण प्रस्तुत किया है जो पूर्णतः यथार्थवादी है।

Scanned by CamScanner